❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

विश्वा ह्यग्ने दुरिता तर त्वम्। - सामवेद 1325

हे प्रकाशस्वरूप प्रभो ! आप हमें सब पापाचारणों से आवश्य दूर करें।

O the luminous Lord ! kindly lead us away from all evil & sinful deeds.

वर्ष 41, अंक 7 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 4 दिसम्बर, 2017 से रविवार 10 दिसम्बर, 2017
विक्रमी सम्वत् 2074 सृष्टि सम्वत् 1960853118
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें– www.thearyasamaj.org/aryasandesh

विशेष लेख

समय की चुनौती का जवाब थे स्वामी श्रद्धानन्द

यह लेख साप्ताहिक आर्यसन्देश के 23 दिसम्बर, 1984 के अंक में प्रकाशित किया गया था। समय एवं लेख की उपयोगिता को देखते हुए 33 वर्ष पश्चात् पुनः इसे पाठकों की जानकारी हेतु प्रकाशित किया जा रहा है। - सम्पादक

- प्रो० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

आर्नॉल्ड तोयनबी एक प्रसिद्ध समाजशास्त्री हुए हैं। उन्होंने समाज में होने वाले परिवर्तनों के सम्बन्ध में एक नियम का प्रतिपादन किया है। उनका कथन है कि समाज में जब कोई असाधारण परिस्थिति उत्पन्न हो जाती है, तब वह व्यक्ति व समाज के लिए चुनौती या चैलेंज का रूप धारण कर लेती है, वह परिस्थिति व्यक्ति तथा समाज को मानो ललकारती है, उसके सामने एक आह्वान पटकती है, और पूछती है कि कोई माई का लाल जो इस असाधारण परिस्थिति का, इस ललकार का, इस आह्वान का मर्द होकर सामना कर सके, इस ललकार का जवाब दे सके?

तोयनबी का कथन है कि जब हम वैयक्तिक या सामाजिक रूप से किसी भौतिक या सामाजिक विकट परिस्थिति से घिर जाते है, तब हम में या समाज में उस कठिन परिस्थिति, कठिन समस्या को हल करने के लिए एक असाधारण क्रियाशक्ति असाधारण स्फुरण उत्पन्न हो जाता है। भौतिक अथवा कठिन, विषम परिस्थिति हमें मलियामेट न कर दे, इसलिए इस परिस्थिति के आह्वान, उसकी ललकार, उसके चैलेंज के प्रति जो व्यक्ति प्रतिक्रिया करने के लिए उठ खड़ें होते हैं, चैलेंज उत्तर देते हे। जो समाज को नया मोड़ देते है, वे ही समाज के नेता कहलाते है। जब समाज किसी उलझन में फंस जाता है तब उसमें से निकलना तो हर एक चाहता है, हर व्यक्ति की यही इच्छा होती है कि यह संकट दूर हो, परन्तु हर कोई उस चैलेंज का सामना करने के लिए अखाडें में उतरने को तैयार नहीं होता। विक्षुब्ध समाज का असन्तोष, उसकी बेचैनी जिस व्यक्ति के प्रतिबिम्बित होने पर जो व्यक्ति उस असन्तोष का सामना करने के लिए खम ठोककर खड़ा होता है, वही जानता की आकांक्षाओं का सरताज होता है।

मैं स्वामी श्रद्धानन्द जीवन की इसी दृष्टि से देखता हूँ। वे समय की चुनौती का, समय की ललकार का जीता-जागता जवाब थे। क्या हमारे सामने चुनौतियों या ललकारें नहीं आती? हम हर दिन चुनौतियों से घिरे हुए है, परन्तु हम में उन चुनौतियों का सामना करने की हिम्मत नहीं। व्यक्ति जीवित रहता है जब वह चुनौतियों का सामना करता रहता है, समाज की चुनौती का काम ही व्यक्ति अथवा समाज में हिम्मत जगा देता है, परन्तु ऐसी अवस्था भी आ सकती है। जब व्यक्ति अथवा समाज इतनी हिम्मत हार बैठे कि उसमें ललकार का सामना करने की ताकत ही न रहें। ऐसी हालत में वह व्यक्ति बेकार हो जाता है। स्वामी श्रद्धानन्द उन व्यक्तियों में से थे जो सामने चैलेंज को देखकर उसका सामना करने के लिए शक्ति के उफान से भर जाते थे। उनका जीवन हर चुनौती का जवाब था, तभी पचास वर्ष बीत जाने पर भी हम उन्हें नहीं भूला सके।

उनके जीवन के पन्नों को पलटकर देखिए कि वे क्या थे? वे अपनी जीवनी में लिखते हैं कि जब उनके बच्चे स्कूल से पढ़कर आते थे तब गाते थे- 'ईसा-ईसा बोल तेरा क्या लगेगा मोल'। आज भी हमारे सामने ऐसी कोई बात चुनौती का रूप नहीं पैदा करती। उस समय वे महात्मा मुन्शीराम थे, उनके सामने बच्चों को इस प्रकार गाना एक चुनौती के रूप में उठ खड़ा हुआ जिसकी प्रतिक्रिया के रूप में एक नवीन शिक्षा प्रणाली की नींव रखी गई। आज जो सब लोग गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के सिद्धान्तों को शिक्षा के आदर्श तथा मूलभूत सिद्धान्त मानने लगे हैं उसका मूल एक चुनौती का सामना करना था जो एक साधारण घटना के रूप में महात्मा मुन्शीराम के सामने उठ खड़ी हुई थी।

सत्यार्थ प्रकाश पढ़तें हुए उन्होंने पढ़ा कि गृहस्थाश्रम के बाद वानप्रस्थाश्रम में प्रवेश करना चाहिए। यह कोई नया आविष्कार नहीं था। जो भी वैदिक संस्कृति से परिचित है वह जानता है कि इस संस्कृति में ये चार आश्रम है। परन्तु नहीं, उस महान् आत्मा के सामने तो यह एक चैलेंज था। पहले सब है, परन्तु उसके लिए तो पढ़ना पढने के लिए नहीं, करने के लिए था। गुरुकुल विश्वविद्यालय की एक जंगल में स्थापना कर वे वहीं रहने लगे- मृत वानप्रस्थाश्रम को उन्होंने अपने जीवन में क्रियात्मक रूप देकर जीवित कर दिया। यह क्या था अगर वैदिक संस्कृति की चुनौती का जवाब नहीं था। फिर वानप्रस्थ तक जाकर ही टिक नहीं गये। वानप्रस्थ के बाद संन्यास लिया, और देश में जितना महात्मा मुंशीराम यह नाम तो विख्यात हो गया। ऐसे भी लोग मुझे मिले है जो 'महात्मा मुंशीराम' और स्वामी श्रद्धानन्द- इन दोनों को अलग अलग व्यक्ति समझते है। इसका कारण यही है कि महात्मा मुन्शीराम ने जिस प्रकार लगातार चुनौती पर चुनौती सामना किया, उसी प्रकार श्रद्धानन्द ने चुनौती का सामना किया, इसलिए कुछ व्यक्तियों के लिए जो यह नहीं जानते थे कि महात्मा मुन्शीराम ही संन्यास लेकर स्वामी श्रद्धानन्द बन गये- ये नाम दो महापुरुषों के नाम हो गए जो अपने-अपने जीवनकाल में असाधारण सामाजिक परिस्थितियों, सामाजिक ललकारों और चुनौतियों के साथ जूझकर अपने जीवन की अमर कहानी लिख गयें।

गुरुकुल में रहते हुए वे एक पत्र निकाला करते थे जिसका नाम था 'सद्धर्म प्रचारक' यह पत्र उर्दू में प्रकाशित हुआ करता था। इसके ग्राहक उर्दू जानने वाले थे, हिन्दी जानने वाले नहीं थे। एक दिन अचानक वह पत्र सब ग्राहकों के पास उर्दू के स्थान पर हिन्दी में पहुंचा। यह क्या चुनौति का जवाब नहीं थ? जिस व्यक्ति ने घोषणा की हो कि वह गुरुकुल में ऊंची से ऊंची शिक्षा मातृ-भाषा हिन्दी में देने का प्रबन्ध करेगा, उसका पत्र उर्दू में प्रकाशित हो- यह विडम्बना थीं। उन्हें मालूम था कि एकदम उर्दू से हिन्दी पत्र करने से ग्राहक छंट जायेंगे, परन्तु इस चैलेंज का उन्हें सामना करना था। परिणाम यह हुआ कि उनकी आवाज को सुनने के लिए ग्राहकों ने हिन्दी सीखना शुरू किया और पत्र के ग्राहक पहले से कई गुना बढ गए। लोग हिन्दी की दुहाई देते और उर्दू या अंग्रेजी लिखते-बोलते थे परन्तु उस महान् आत्मा के लिए यही बात एक चुनौती का काम कर गई।

वे किस प्रकार चुनौती का सामना करते थे- इसके एक नहीं अनेक उदाहरण है। सत्याग्रह के दिनों में जब जनता जलूस दिल्ली के घंटा घर की तरफ बढ़ता जा

- शेष पृष्ठ 7 पर

सार्वदेशिक सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनधि सभा के तत्वावधान में
19वां आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन
उच्च आय वर्ग तथा उच्च शिक्षित-प्रोफेशनल हेतु परिचय सम्मेलन
दिनांक : 4 फरवरी 2018, रविवार, समय - प्रात: 10 बजे
स्थान : आर्य समाज बी-ब्लॉक जनकपुरी, नई दिल्ली-110058
विस्तृत जानकारी पृष्ठ 5 पर

91 वाँ स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

शोभायात्रा
सोमवार, 25 दिसम्बर, 2017
यज्ञ :- प्रातः 8.00 से 9.30 बजे तक
स्थान :- स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन, नया बाजार, दिल्ली
भव्य शोभायात्रा का प्रारम्भ प्रातः 10 बजे
विशाल सार्वजनिक सभा
समय : दोपहर 1.00 से 4.00 बजे तक स्थान : रामलीला मैदान, अजमेरी गेट, नई दिल्ली - 2
अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान दिवस पर हजारों की संख्या में पहुंचकर संगठन का परिचय दें।
नोट : ऋषि लंगर की व्यवस्था सभा की ओर से रहेगी।
निवेदक : आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1

वेद-स्वाध्याय

तपाग्नि की महती महिमा

पवित्रं ते विततं ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणि पर्येषि विश्वतः।
अतप्ततनूर्न तदामो अश्नुते शृतास इद्वहन्तस्तत्समाशत।। - ऋ. 9/83/1
ऋषिः पवित्रः।। देवता - पवमानः सोमः।। छन्दः निचृज्जगती।।

शब्दार्थ - ब्रह्मणस्पते = हे ब्रह्माण्ड के पते! ते पवित्रम् = तेरा पवित्रताकारक पवित्र ज्ञान-सामर्थ्य विततम् = सब कहीं फैला हुआ है। प्रभुः = (इस पवित्र के साथ) तुम प्रभु गात्राणि = मेरे शरीरों, अवयवों में भी विश्वतः पर्येषि = सब ओर से प्राप्त हुए हो, परन्तु अतप्ततनूः = जिसने अपने शरीर को तप से तपाया नहीं है अतएव आमः = जो कच्चा है वह तत् = उस पवित्र को न अश्नुते = नहीं पाता। शृतासः इत् = जो पके हुए हैं वे ही वहन्तः = उसे धारण करते हुए तत् समाशत = उसे अच्छी प्रकार प्राप्त करते हैं।

विनय - हे ब्रह्माण्डपते! मैंने जाना कि मेरा शरीर अपवित्र क्यों है। यद्यपि तुम्हारा पवित्रताकारक सामर्थ्य जगत् में सब कहीं फैला हुआ है, तुम ही उस पवित्र के साथ मेरे शरीर के रोम-रोम में रम रहे हो, तो भी यह शरीर पवित्र नहीं है इसका कारण मैंने जाना। इसका कारण यह है कि मैंने तप की अग्नि से अपने शरीर को पकाया नहीं है। बिना आग में तपाये मिट्टी के घड़े में पवित्रताकारक जल कैसे ठहर सकता है? इसी प्रकार तपोरहित मेरे शरीर में तुम्हारी पावनी शक्ति नहीं ठहर सकती। बिना इसे शरीर में धारण किये इससे लाभ कैसे उठाऊं? और इसे धारण करने के लिए तो पका हुआ शरीर चाहिए। एवं, इसे धारण न कर सकने के कारण मैं अभी तक इसके सब आनन्द से, सब रस से वञ्चित हूं। सचमुच तपोहीन पुरुष के लिए इस जगत् में कुछ भी रस नहीं है, कुछ भी सुख नहीं है। मैंने जाना कि यदि मैं अपने अन्नमय शरीर को ब्रह्मचर्य, व्यायाम, आसन, प्राणायाम आदि तप से तपाकर इसे पका लूंगा, तभी मेरा यह शरीर तेरी पावनी शक्ति को धारण करके शारीरिक सौख्य को पा सकेगा। मैंने जाना है कि यदि मैं वृत्ति निग्रह, योग, एकाग्रता आदि तपों की अग्नि से अपने मानसिक शरीर को पका लूंगा, तभी यह शरीर तुम्हारे पावन ज्ञान-रस को धारण कर सकेगा। तप की अग्नि से जब स्थूल व सूक्ष्म शरीर के स्थूल-सूक्ष्म मैल निकलते हैं तो तेरी सर्वव्यापक शक्ति इनमें आने लगती है, भरने लगती है। इस प्रकार तप से पवित्रता और शक्ति आती है, शरीर परिपक्व होते जाते हैं। अहो! पवित्र होने से कैसा अद्भुत आह्लाद मिलता है! शक्ति भरने पर कैसा सुख अनुभव होता हे! तप न करने वाले लोग इसे क्या जानें? अतपस्वी लोगों का काम न दे सकनेवाला मलिन रोगग्रस्त (स्थूल) शरीर और अतपस्वियों का इधर-उधर भटकनेवाला, असंयत भय, चिन्ता, क्रोध, इच्छादि से पीड़ित मन (मानसिक शरीर) किस काम का होता है? यदि प्रभु के पवित्रताकारक सामर्थ्य के समुद्र में बैठे हुए भी उससे वञ्चित नहीं रहना है तो जल्दी करो; तप करो, तप से अपने देहों को परिपक्व बनाते रहो। तप से पके शरीरों से ही यह प्राप्त किया जाता है।

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

राजनीति का नव थप्पड़वाद

भारतीय राजनीति से मार्क्सवाद, समाजवाद और पूंजीवाद गुजरे जमाने की बात हो गयी है। अब जो नया वाद आया है वह विवाद विषय बना हुआ है। एक समय था जब सत्ता प्रप्ति के युद्ध करने पड़ते थे, तलवार और धनुष-कमान उठाने पड़ते थे। धीरे-धीरे जमाना गुजरा और आज सत्ता की प्रप्ति के लिए थप्पड़ मार प्रतियोगिता चल रही है। हाल ही में पटना बीजेपी कार्यालय के प्रेस प्रभारी ने अपने बयान में घोषणा की कि लालू पुत्र आरजेडी नेता तेजप्रताप को थप्पड़ मारने वाले को 1 करोड़ रुपये का इनाम दिया जाएगा। हालाँकि आज कल इस तरह के इनाम घोषित के मामले राजनीति में लगातार आ रहे हैं। लेकिन सवाल जरूर उठते है कि एक थप्पड़ पर इतना पैसा क्यों जाया किया जाये? दूसरा पता नहीं कोई थप्पड़ मारे य नहीं! इससे बेहतर यह है कि खुद ही यह काम कर देना चाहिए इससे थप्पड़ भी लग जायेगा और पैसा भी बच जायेगा।

दो दिन पहले ही हरियाणा भाजपा मीडिया के पूर्व कॉडिनेटर सूरजपाल अम्मू ने कहा था कि मैं लाल चौक पर खड़े होकर फारूक अब्दुल्ला को थप्पड़ मारना चाहता हूं और इसके लिए मैं चाहता हूं कि वे मुझे वहां आकर मिलें। भला इसके लिए इतनी मेहनत क्यों? क्या पता वहां अब्दुल्ला आये न आये! हाँ अब्दुल्ला दिल्ली आते जाते रहते हैं आप अपना कार्य किसी दिन जरूर पूरा कर सकते हैं पर इसके लिए इतना शोर क्यों? दरअसल थप्पड़ मारना, नाक काटना, गला या बोटी-बोटी काटने की यह मौखिक बयानों की प्रतियोगिता बीते कुछ समय से समाज और राजनीति का हिस्सा बनती जा रही है।

जब इसी साल सोनू निगम ने जब एक ट्वीट के जरिये अपनी परेशानी जाहिर की कि ''मैं मुस्लिम नहीं हूं और मुझे अजान की आवाज से सुबह उठना पड़ता है, भारत में इस जबरदस्ती की धार्मिकता का अंत कब होगा?'' तो इसके बाद देश भर में मौखिक विवाद खड़ा हो गया था उसी समय पश्चिम बंगाल की माइनॉरिटी यूनाइटेड काउंसिल की ओर से ये फतवा जारी किया गया। काउंसिल के वाइस प्रेसिडेंट सैयद शा अली अल कादरी ने कहा था कि जो भी सोनू निगम का मुंडन कर और जूतों की माला पहनाकर देशभर में घुमाएगा, उसे 10 लाख रुपए इनाम दिया जाएगा। हालाँकि फतवे के बाद सोनू निगम ने अपना मुंडन खुद ही करा कर जब इनाम राशि मांगी तो सैयद शा अली अल कादरी पैसे देने से मुकर गये। आसान शब्दों में इसे फतवा घोटाला भी कहा जा सकता है।

असल में जातिवाद के बाद इस नव थप्पड़वाद की गूंज भारतीय राजनीति में ज्यादा सुनाई दे रही है। साल 2014 में पानीपत में हरियाणा के तत्कालीन मुख्यमंत्री जी को एक युवक ने सरेआम थप्पड़ मार दिया था। हुड्डा एक खुली जीप पर सवार थे। इस युवक को फौरन हिरासत में ले लिया गया तथा इस कृत्य के बदले उसे जेल में क्या इनाम मिला होगा आप भलीभांति अंदाजा लगा सकते हैं! उसी साल केजरीवाल जी उत्तर-पश्चिम दिल्ली लोकसभा सीट से आप प्रत्याशी राखी बिड़ला के लिए प्रचार कर रहे थे। इसी दौरान उन पर हमला हुआ। हमलावर ने पहले उन्हें माला पहनाई और बाद में थप्पड़ मारा था।

आज भारत की राजनीति काफी बदल चुकी है, सुचिता और शिष्टाचार किसी भी लोकतंत्र को मजबूती प्रदान करते हैं लेकिन वर्तमान राजनीति बदजुबानी पर टिक चुकी है जबान पर काबू न रखने वाले नेताओं को नोटिस और चेतावनी वगैरा देने का फायदा यह होता है कि नेताओं के काम-काज पर सवाल उठाने का मौका नहीं मिलता। इस बीच इतना समय मिल जाता है कि विपक्ष और मीडिया की मेहरबानी से इच्छित मैसेज भी सही जगह पहुंच जाता है। लोगों को हंसाने के लिए अपने पक्ष में करने के लिए विरोधी नेताओं के अपमान की एक तगड़ी खुराक की आदत लोगों डाली जा रही है। यह भी सोचना होगा कि कुछ महत्वाकांक्षी नेता सिर्फ खुद को चमकाने के लिए ऐसे बयान दे रहे हैं या इसके पीछे सुविचारित रणनीति है।

...साल 2014 के शुरूआती दिनों में सहारनपुर से कांग्रेस नेता इमरान मसूद ने वर्तमान प्रधानमंत्री और तब के विपक्ष के नेता नरेन्द्र मोदी को बोटी-बोटी काटने की धमकी दी थी तो बदले में उन्हें वहां से चुनाव का टिकट प्राप्त हुआ। तो पश्चिम बंगाल से पिछले दिनों एक इमाम मौलाना सैयद नूर उल रहमान बरकती थे कहा था कि अगर बीजेपी से कोई यहां आया तो ''उसे मार-मार कर भूसा उड़ा देंगे।''.....

साल 2014 के शुरूआती दिनों में सहारनपुर से कांग्रेस नेता इमरान मसूद ने वर्तमान प्रधानमंत्री और तब के विपक्ष के नेता नरेन्द्र मोदी को बोटी-बोटी काटने की धमकी दी थी तो बदले में उन्हें वहां से चुनाव का टिकट प्राप्त हुआ। तो पश्चिम बंगाल से पिछले दिनों एक इमाम मौलाना सैयद नूर उल रहमान बरकती कहा था कि अगर बीजेपी से कोई यहां आया तो ''उसे मार-मार कर भूसा उड़ा देंगे।'' इसके कुछ दिन बाद बिहार बीजेपी के अध्यक्ष नित्यानंद राय ने मोदी के विरोधियों से निपटने की धमकी देते हुए कहा कि उनके खिलाफ उठने वाली हर उंगली को तोड़ दिया जाएगा और जरूरत पड़ी तो विरोध में उठने वाले हर हाथ को मिलकर काट देंगे। पद्मावती फिल्म को लेकर नायिका और निर्माता के सिर काटने की करोड़ो के इनाम की घोषणा सबने सुनी ही है।

दरअसल जो युवा आज राजनीति में अपना करियर शुरू करने जा रहे हैं यह सब उनके लिए एक आसान सी राह बन गयी है मसलन राजनीति में आने के लिए आपको भारत के इतिहास और भूगोल यहाँ के लोकतंत्र और संविधान का ज्ञान भले ही न हो बस बदजुबानी आनी चाहिए। यदि आप इसमें पारंगत है तो बाकी का काम मीडिया स्वयं कर देता है। इसका एक नवीन उदहारण युवा नेता तेजप्रताप यादव हैं जिसने अपने पिता लालू यादव की सुरक्षा में कमी किए जाने पर सीधे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को ही धमकी दे डाली थी कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का खाल उधेड़ देंगे। इन सब बदजुबानी के बाद सवाल उभरते हैं कि राजनीतिज्ञों द्वारा एक दूसरे को मारने कूटने की धमकी जनता को पसंद है या यह सब नई पसंद बनाई जा रही है या फिर राजनेता देश के आन्तरिक लोकतंत्र और राजनैतिक मर्यादा को महत्त्वहीन बना रहे हैं?

- सम्पादक

संकल्प शक्ति की महिमा

...संसार की सफलताओं का मूल मन्त्र है उत्कृष्ट मानसिक शक्ति, दृढ़ संकल्प शक्ति, इसी की प्रबलता से संसार में व्यक्ति को कोई भी वस्तु अप्राप्य नहीं रह जाती। अपार धन-संपत्ति हो, चाहे उत्कृष्ट विद्या हो, समाज में प्रतिष्ठा हो या मान-सम्मान हो सब कुछ इसी साधन के माध्यम से व्यक्ति प्राप्त कर लेता है। लौकिक सफलताओं के साथ-साथ यह एक ऐसा आधार-स्तम्भ है जिसके द्वारा एक आध्यात्मिक व्यक्ति भी अपनी साधना क्षेत्र में सफल हो जाता है।....

हमारे जीवन में संकल्प शक्ति का बहुत ही बड़ा महत्व है। इसी से व्यक्ति के जीवन का निर्माण होता है, व्यक्ति अपने जीवन को ही परिवर्तन करके नया रंग भर सकता है, निम्न स्तर से व्यक्ति महान बन जाता है। हम जो भी इच्छा करते हैं वह दो प्रकार की होती है , एक सामान्य इच्छा और एक विशेष इच्छा, यह विशेष इच्छा ही जब उत्कृष्ट, दृढ़ व प्रबल बन जाती है उसी को ही संकल्प कहते हैं। हम जो कुछ भी क्रिया करते हैं उसके तीन ही साधन हैं शरीर, वाणी और मन। वाणी और शरीर में क्रिया आने से पहले मन में ही होती है अर्थात् कर्म का प्रारम्भिक रूप मानसिक होता है । मन में हम बार-बार आवृत्ति करते हैं कि- ''मैं उसको ऐसा बोलूँगा..'', ''मैं इस कार्य को करूँगा..'' उसके पश्चात् ही वाणी से बोलते अथवा शरीर से करते हैं। मन में यह जो दोहराना होता है, यही संकल्प होता है।

व्यक्ति का जीवन उत्कृष्ट, आदर्शमय होगा या निकृष्ट होगा यह उसकी इच्छा, संकल्प अथवा विचार से ही निर्धारित होता है। किसी शास्त्रकार ने कहा भी है कि- ''यन्मनसा चिन्तयति तद्वाचा वदति, यद्वाचा वदति तत् कर्मणा करोति, यत् कर्मणा करोति तदभिसंपद्यते'' अर्थात् जिस प्रकार का विचार व्यक्ति करता है उसका जीवन भी उस प्रकार का बन जाता है । योग शास्त्र के इस वाक्य -''चित्तं ही प्रख्या-प्रवृत्ति-स्थितिशीलत्वात् त्रिगुणम्'' के अनुसार चित्त व मन तीन-तत्वों से बना है, सत्व- गुण, रजोगुण और तमोगुण। कभी किसी गुण की अधिकता होती है तो कभी किसी की न्यूनता होती रहती है । जिसकी अधिकता व प्रबलता होती है उसका प्रभाव अधिक मन में, क्रिया में अथवा जीवन-व्यवहार में देखा जाता है। अत: मन में उठने वाले विचार व संकल्प भी तीन ही प्रकार के होते हैं, सात्त्विक संकल्प, राजसिक संकल्प तथा तामसिक संकल्प, परन्तु यहाँ व्यक्ति स्वतन्त्र होता है कि किस प्रकार के संकल्प को मन में स्थान दे, क्योंकि मन में दो प्रकार से परिवर्तन होता है, एक है वृत्ति रूप में और दूसरा है पदार्थ रूप में । वृत्ति अर्थात् विचारों की भिन्नता होने से परिवर्तन देखा जाता है जिसको कि निरन्तर अभ्यास करने से व्यक्ति नियन्त्रण करने में समर्थ हो सकता है और जिस प्रकार की इच्छा करेगा उस प्रकार का विचार उठा सकता है परन्तु पदार्थ रूप में जो परिवर्तन आता है उसको नियन्त्रित नहीं किया जा सकता ।

किसी भी कार्य के प्रारम्भ करने से पहले संकल्प करना हमारी प्राचीन परम्परा रही है। हमारी वैदिक परम्परानुगत यज्ञ आदि जो भी शुभ कार्य करते हैं सर्वप्रथम हम संकल्प पाठ से ही आरम्भ करते हैं। संकल्प के माध्यम से व्यक्ति मजबूत बनता है, अन्दर से दृढ़, बलवान् होता जाता है। प्रत्येक क्षेत्र में हर प्रकार से उन्नति करने के लिए व्यक्ति को स्वयं को संकल्पवान बनाना चाहिए। जिसको मन में संकल्प कर लिया उसको व्यवहार में क्रियान्वयन करना ही है। जिसका संकल्प जितना मजबूत होता है उसको उतनी ही सफलता मिलती जाती है ।

संकल्प शक्ति को बढ़ाने के लिए सबसे पहले हमें छोटे-छोटे संकल्प लेने चाहिए जोकि हमारे लिये लाभदायक हों, हमारे जीवन के साथ-साथ अन्यों के लिए भी उपयोगी हों और उसको पूरा बल लगा कर तन-मन-धन से निष्ठापूर्वक पूर्ण करना चाहिए। जैसेकि हम संकल्प ले सकते हैं प्रात: काल जल्दी उठने का और रात्रि को जल्दी सोने का और जिस समय का निश्चय किया हो उसी समय ही उठना और सोना चाहिए। इस प्रकार संकल्प लेकर पूरा करने से मन भी दृढ़ होता है और आत्मविश्वास भी बढ़ता है। धीरे-धीरे बड़े-बड़े कार्यों का संकल्प लेना चाहिये जैसेकि ''मुझे किसी भी परिस्थिति में सत्य ही बोलना है'', ''मुझे कभी भी आलस्य नहीं करना है'' ''मैं कभी चोरी नहीं करूँगा, सदा पुरुषार्थ ही करूँगा'' ''मैं किसी के लिए भी कभी अपशब्द का प्रयोग नहीं करूँगा'', ''कभी क्रोध नहीं करूँगा'', ''किसी से ईर्ष्या-द्वेष नहीं करूँगा''; "मैं सदा गरीब, निर्धन, असहाय, जरुरतमन्द व्यक्तिओं की सहायता करूँगा''। इस प्रकार एक-एक संकल्प को लेकर जीवन भर निभाना चाहिए जिससे अपना जीवन भी सुधरता है, विकसित होता है, स्वयं का विश्वास भी बढ़ता है साथ-साथ अन्य लोग भी उस व्यक्ति के ऊपर विश्वास करने लग जाते हैं कि- ''यह व्यक्ति जो भी संकल्प लेता है, मन में जो ठान लेता है उसको करके ही छोड़ता है'' और ऐसा विचार कर अनेक प्रकार से सहयोग भी करते हैं, इस प्रकार धीरे धीरे हम इसी संकल्प शक्ति के माध्यम से बड़े से बड़ा कार्य भी करने में समर्थ हो जाते हैं। शास्त्रों में भी शारीरिक शक्ति की अपेक्षा मानसिक शक्ति के महत्व को अधिक स्वीकार किया है। योग दर्शन के भाष्यकार लिखते हैं कि ''**मानसिक-बल-व्यतिरेकेण क: दंडकारण्यं शून्यं कर्तुम् उत्सहेत्**'' अर्थात् केवल शारीरिक कर्म के द्वारा कौन भला मानसिक बल के बिना दंडकारण्य को शून्य करने में समर्थ हो सकता है।

संसार की सफलताओं का मूल मन्त्र है उत्कृष्ट मानसिक शक्ति, दृढ़ संकल्प शक्ति, इसी की प्रबलता से संसार में व्यक्ति को कोई भी वस्तु अप्राप्य नहीं रह जाती। अपार धन-संपत्ति हो, चाहे उत्कृष्ट विद्या हो, समाज में प्रतिष्ठा हो या मान-सम्मान हो सब कुछ इसी साधन के माध्यम से व्यक्ति प्राप्त कर लेता है। लौकिक सफलताओं के साथ-साथ यह एक ऐसा आधार-स्तम्भ है जिसके द्वारा एक आध्यात्मिक व्यक्ति भी अपनी साधना क्षेत्र में सफल हो जाता है। यह एक ऐसी दिव्य विभूति है जिससे मनुष्य ऐश्वर्यवान् बन जाता और अकल्पनीय, अविश्वसनीय कार्यो को करते हुए सबको हतप्रभ कर देता है। संकल्प एक ऐसा कवच है जो कि धारण करने वाले को माता के समान सभी प्रकार के विपरीत अथवा विकट परिस्थितियों से निरन्तर रक्षा करता रहता है। किसी भी लौकिक अथवा आध्यात्मिक कामनाओं की पूर्ति का मूल मन्त्र संकल्प ही है। किसी भी सफल व्यक्ति के जीवन का यदि हम निरीक्षण करें तो ज्ञात होगा कि उसकी सफलता के पीछे अवश्य ही संकल्प का हाथ होगा ।

जब हम कोई लक्ष्य निर्धारित कर लेते हैं तो उसकी सिद्धि के लिए सर्व प्रथम दृढ़ संकल्प और उसके पश्चात् अत्यन्त उद्योग, कठोर पुरुषार्थ, एकाग्रता व तत्परता भी आवश्यक होता है। यह सत्य है कि संकल्प और पुरुषार्थ के बिना सफलता की सिद्धि नहीं होती। संकल्प से हमारी बुद्धि लक्ष्य के प्रति स्थिर रहती है और हम अन्तिम क्षण तक सक्रिय बने रहते हैं तथा बड़े से बड़ा अवरोधक तत्व भी हमारी सफलता को रोक नहीं सकता। कभी तमोगुण से प्रभावित होकर, तामसिक संकल्पों से युक्त होकर असत्य, अन्याय, अधर्म, अत्याचार, भ्रष्टाचार, चोरी, डकैती, व्यभिचार आदि कर्मो के द्वारा अपना तथा दूसरों के जीवन को नष्ट न कर दें इसीलिए वेद में ईश्वर ने निर्देश दिया कि "तन्मे मन: शिव संकल्पमस्तु" अर्थात् मेरा मन सदा कल्याणकारी संकल्पों से युक्त हो, अपना तथा अन्यों की उन्नति के लिए प्रयत्नशील हो । जब भी हम कोई संकल्प लेते हैं और लक्ष्य कि ओर चल पड़ते हैं तो संकल्प की सिद्धि और हमारे बीच में अनेक प्रकार की परिस्थितियाँ व्यवधान बनकर खड़ी हो जाती हैं तो हमें यहाँ अत्यन्त संघर्ष करना होता है । कोई व्यक्ति जब यह कहता है कि ''मैं तो इस कार्य को किसी भी प्रकार से करूँगा ही'' तो वह कभी न कभी सफल हो ही जाता है और ठीक इसके विपरीत जो व्यक्ति संकल्प ही नहीं लेता और कहता है कि मैं तो इस कार्य को नहीं कर पाऊंगा तो वह कभी भी सफल नहीं हो सकता। जब भी हमें किसी कार्य में असफलता मिलती है तब कभी भी हताश-निराश होकर संकल्प को छोड़ नहीं देना चाहिए। विचार करना चाहिए कि - हमारे सामर्थय में कहीं कुछ कमी हो, हमारी क्रिया करने की शैली में कमी हो, उस विषयक हमारा अनुभव न हो, अथवा साधनों में कोई न्यूनता हो, क्योंकि असफलता के पीछे यही मुख्य कारण होता है। न्याय शास्त्रकार ने भी कहा है कि ''कर्म-कर्तृ-साधन वैगुण्यात्'' अर्थात् कर्म में कोई दोष हो, कर्ता में कोई दोष हो अथवा साधनों में कोई दोष हो तो सफलता नहीं मिलती। अत: दोषों को पहचानें और उनको दूर करने का प्रयत्न करें तभी हमारा संकल्प सफल हो पायेगा ।

सबसे बड़ा हमारा लक्ष्य है आनन्द की प्राप्ति, ईश्वर-प्राप्ति अथवा मोक्ष-प्राप्ति। इस महान् लक्ष्य के लिए हमें संकल्प भी उतनी ही महानता से, दृढ़ता के साथ लेना होगा तथा उतना महान् घोर-पुरुषार्थ भी करना होगा । तो आइये हम सब संकल्पवान बनें और जीवन के अन्तिम लक्ष्य को प्राप्त करके अपने जीवन को सार्थक-सफल बनायें ।

- आचार्य नवीन आर्य 'केवली'

बोध कथा

जीवन सितार बजाओ !

लाहौर में एक बार आर्य समाज का उत्सव हो रहा था। एक सज्जन आए; बोले-''मैं बहुत अच्छी सितार बजाकर गाता हूं। मुझे एक गीत सुनाने का समय दिया जाय।''

प्रोग्राम में से कोई समय निकलता नहीं था, परन्तु कई दूसरे व्यक्तियों ने भी समय देने के लिए कहा तो मंत्री जी ने कहा- ''अच्छा, पन्द्रह मिनट आपको दिये जाते हैं। पन्द्रह मिनट में अपना गाना समाप्त कीजिये।''

गाने वाले सज्जन अपने सितार को लेकर स्टेज पर आ पहुंचे और अपने सितार की तारों को हिला-हिलाकर कीलियां मरोड़ने लगे। थोड़ी-थोड़ी देर के पश्चात् टंग-टंग की ध्वनि होती और फिर कोई कीली मरोड़ी जाती। इस प्रकार पांच मिनट व्यतीत हो गए। मंत्री जी ने कहा -''श्रीमन्! आप गायेंगे भी या इसी प्रकार कीलियां मरोड़ते रहेंगे?''

वे बोले-''श्रीमन्! अभी गाता हूं, सितार के तार ठीक कर लूं।'' और फिर कीलियां मरोड़ने लगे। दस मिनट व्यतीत हो गये। बारह-चौदह मिनट बीत गये, उनका कीलियां मरोड़ना समाप्त नहीं हुआ। मंत्री जी ने कहा-''एक मिनट शेष है, अब भी कुछ गाना हो तो गा लो।''

वह अन्तिम मिनट में भी कीलियां ही मरोड़ते रहे। मंत्री ने खेद के साथ कहा-''आइए श्रीमन्! मंच से नीचे उतर आइये, आपका समय हो गया।''

अरे ओ जीवन की सितार बजाने वालो! सोचो! सोचो कि कब तक तुम सितार की कीलियां ही मरोड़ते रहोगे, शरीर को बनाते और संवारते ही रहोगे? अरे! यह सितार गाने के लिए मिली है, केवल मरोड़ने के लिए नहीं। शरीर की रक्षा करो अवश्य। इसे खिलाओ, पिलाओ। इसे स्वस्थ बनाये रखो, परन्तु आत्मा को भी तो कुछ खिलाओ, जो वास्तविक गाने वाला है। इसके बिना यह सितार व्यर्थ है। इसके बिना आंख देखती नहीं, हाथ हिलता नहीं, जिह्वा चलती नहीं, नाक सूंघती नहीं-कुछ भी नहीं होता।

साभार : बोध कथाएं

बोध कथाएँ: वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

जन्म दिवस
5 दिसम्बर पर विशेष

पं. वीरसेन वेदश्रमी

पण्डित वीरसेन वेदश्रमी, वेद विज्ञानाचार्य का जन्म 5 दिसम्बर 1908 को देवास (म.प्र.) में हुआ। आपने गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन में शिक्षा ग्रहण की। आपने गुरुकुल से आयुर्वेद शिरोमणि लब्ध प्रतिष्ठित स्नातक उपाधि सन् 1930 में प्राप्त की। आपने 1938 ई. वेद सदन महारानी रोड, इन्दौर में रहकर वैदिक घनपाठ गुरुजनों से वेद-वेदांग का अध्ययन एवं वैदिक अनुसन्धान में रत रहे।

वेदपाठ सम्बन्धी कार्य : यजुर्वेद एवं सामवेद कण्ठस्थ किया और इनका सहस्र बार से भी अधिक पारायण किया। चारों वेदों का पारायण 108 बार श्री स्वामी गंगेश्वरानन्द जी महाराज के संरक्षण में किया। यजु: संहिता के अनेक अध्यायों का विलोम पाठ तथा अक्षर विलोम पाठ भी अनेक वर्ष किया। यजुर्वेद अध्याय 31 व 40 तथा कतिपय अनुवाकों के पद, क्रम, जटा, घनादि पाठ अभ्यस्त किये। प्रशिक्षण एवं अभ्यास वेदशास्त्र-सम्पन्न श्री पं. गुरुवर्य विनायक आत्माराम जी बाजपेयी से 20 वर्ष तक अभ्यास किया। ऋग्वेद सस्वर पाठ का अभ्यास, ऋग्वेद घनपाठ और सामवेद का अभ्यास सम्पन्न किया। आप सम्भवत: एक मात्र आर्य समाजी विद्वान् थे जिन्होंने पद, क्रम, जप, घन आदि प्रक्रिया से वेद पाठ सीखा था। आपको अनेक संस्थानों द्वारा अनेक बार सम्मानित किया गया। आप उच्चकोटि के वेद विद्वान थे। आपने अनेक वैदिक पुस्तकों की रचना की और आज भी आपकी अनेक कृतियां अभी भी अप्रकाशित पड़ी हैं।

अपने 'सहयोग' को बनाएं किसी की मुस्कान

सर्वविदित है कि आर्य समाज के कार्य देश-विदेश में संचालित हैं, कुछ कार्य नितान्त आदिवासी क्षेत्रों में संचालित हैं। उन क्षेत्रों में कार्य करते हुए देश में व्याप्त गरीबी को निकटता से देखने का अवसर मिला, महसूस हुआ कि अभी देश की तस्वीर बदलने में समय लगेगा परन्तु इसमें हम सब मिलकर बहुत कुछ कर सकते हैं। यही सोच कर आर्यसमाज ने महाशय धर्मपाल जी की प्रेरणा से ''सहयोग'' नामक योजना आरम्भ की।

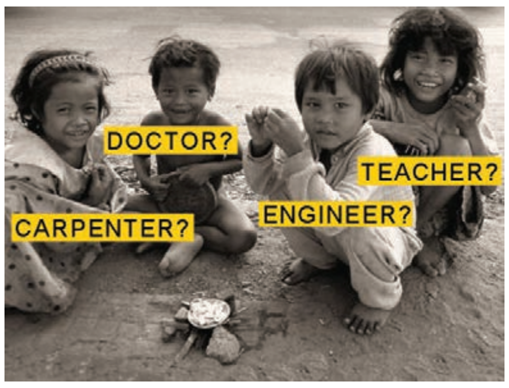

'अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ' की पहल ''सहयोग'' वस्त्रों की आधारभूत आवश्यकता की पूर्ति व शिक्षा के मूलभूत अधिकार के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु प्रयासरत है । इस प्रयास व महत लक्ष्य की पूर्ति हेतु आपके संचालन में सामजिक सेवा में सेवारत आर्यसमाज के सदस्य व स्थानीय निवासी अपने परिवार के किसी भी सदस्य के वह वस्त्र जो उपयोगी हैं किन्तु किसी कारण से अब आपके उपयोग में नहीं आ रहे हैं तथा वह पुस्तकें जो पाठ्यक्रम में हैं पाठ्यक्रम (Course) पूरा कर लेने के पश्चात् अब अन्य किसी जरूरतमंद छात्र की शिक्षा में सहयोगी हो सकती हैं, को ''सहयोग'' के माध्यम से जरूरतमंद व्यक्ति तक पहुंचा सकते हैं।

आपके द्वारा संचालित आर्य समाज ऐसे वस्त्रों, जूतों, खिलोनों अथवा पुस्तकों को ''सहयोग'' की सहयोगी संस्था बनकर व "CLOTH BOX" स्थापित कर एकत्रित कर सकती है। पश्चात् ''सहयोग'' आपके सहयोग से एकत्रित वस्त्र, जूते, खिलोने, पुस्तकें एवं वे सभी अन्य वस्तुएं जो आपके लिए अनुपयोगी हैं किन्तु किसी दूसरे को सहयोग दे सकती हैं, को सहयोगी आर्य समाज व संस्थाओं से संकलित कर, छांटकर, पैककर देशभर के अनेक आदिवासी क्षेत्रों में आर्य समाज, संस्थाओं के माध्यम से जरुरतमंदों तक पहुंचाने का कार्य निष्पादित करेगी। ''**सहयोग**'' के विषय में किसी भी प्रकार की जानकारी प्राप्त करने के लिए **श्री रवि आर्य जी** से मोबाइल नं. 9540050322 पर संपर्क कर सकतें हैं। सभी आर्य समाजों के सहयोग से दिल्ली में इस कार्य को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के माध्यम से संचालित किया जा रहा है।

मातृशक्ति

मां का कर्त्तव्य - बालकों की शिक्षा

आज के आधुनिक युग में शिक्षा का सम्पूर्ण भार जैसे विद्यालयों के ऊपर लाद दिया गया लगता है। बच्चा जो कुछ पढ़ेगा सीखेगा वह विद्यायल से घर में माता-पिता बालक को शिक्षित करने का अपना दायित्व छोड़ते से नजर आ रहे हैं। यह परिवर्तन आज के पूंजीवादी दृष्टिकोण का परिणाम है। छोटे बालकों को माता-पिता कैसी शिक्षा दें इस सम्बन्ध में ऋषि दयानन्द ने अपने सुप्रसिद्ध ग्रन्थ ''सत्यार्थ प्रकाश'' में बहुत सुन्दर वर्णन किया है। अत: हम उनके ही सुन्दर शब्दों को नीचे उद्धृत कर देना उपयुक्त समझते हैं। स्वामी जी लिखते हैं-

बालकों को माता-पिता सदा उत्तम शिक्षा देवें जिससे सन्तान सभय बने तथा किसी भी अंग से कुचेष्टा न करने पाये। जब बालक बोलना प्रारम्भ करे तब उसकी माता बालक की जिह्वा जिस प्रकार कोमल होकर स्पष्ट उच्चारण कर सके, वैसा उपाय करे। जिस वर्ण का जो स्थान प्रयत्न हो। जैसे-'प' इसको होठ स्थान और स्पृष्ट प्रयत्न अर्थात् दोनों 'होठों' को मिलाकर (तथा जीभ को होठों से स्पर्श करके) बोलना तथा ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत अक्षरों को ठीक-ठीक बोल सकना और बोलते समय जिस प्रकार वाणी में माधुर्य, गमीरता, सौन्दर्य तथा स्वर, अक्षर, मात्रा, पद, वाक्य, संहिता, अवसान भिन्न-भिन्न श्रवण होवे, ऐसा प्रयत्न करें। जब बालक कुछ-कुछ समझने लगे, तब सुन्दर वाणी तथा बड़े, छोटे, माता, पिता, राजा, विद्वान् आदि से भाषण, उनके साथ व्यवहार और उनके पास बैठने, उठने आदि की भी शिक्षा करें। जिससे उनका कहीं अयोग्य व्यवहार न होने पावे तथा सर्वत्र उनकी प्रतिष्ठा ही हुआ करे। जिस प्रकार से सन्तान जितेन्द्रिय, विद्याप्रिय और सत्संग में रुचि

करे, वैसा प्रयत्न निरन्तर करते रहें। व्यर्थ क्रीड़ा, रोदन, हास्य, लड़ाई, झगड़ा, हर्ष, शोक, किस पदार्थ से लोलुपता, ईर्ष्या, द्वेषादि न करें। उपस्थन्द्रिय के स्पर्श तथा मर्दन से वीर्य की क्षीणता, नपुंसकता होती है तथा हाथ में दुर्गन्ध होती है। इससे उसका स्पर्श न करें। सदा सत्य भाषण, शौर्य, धैर्य, प्रसन्नता आदि गुणों की प्राप्ति जिस प्रकार हो सके, करावे। जब बालक-बालिका पांच वर्ष के हों, तब देवनागरी अक्षरों का अभ्यास करावें और अन्य देशीय भाषाओं के अक्षरों का भी। उसके पश्चात् जिनके द्वारा अच्छी शिक्षा, विद्या, धर्म, परमेश्वर, माता, पिता, आचार्य, विद्वान, अतिथि, राजा, प्रजा, कुटुम्ब, बन्धु, भगिननी, भृत्य आदि से कैसे-कैसे वर्तना आदि सुन्दर शिक्षा मिले, इस प्रकार के मंत्र, श्लोक, सूत्र, गद्य, पद्य आदि सुभाषित वचनों को भी अर्थ सहित कण्ठस्थ करावें। जिस प्रकार सन्तान किसी छली, धूर्त के बहकाने में न आवे और जो विद्या, धर्म विरुद्ध भ्रान्ति जाल में फंसाने वाले व्यवहार तथा बातें हैं, माता, पिता उनको भी उपदेश कर दें जिससे बाल्यकाल से ही उनके हृदय में भूत, प्रेत आदि मिथ्या बातों का विश्वास न होने पाए। इसी प्रकार शाकिनी, डाकिनी, मारण, मोहन, उच्चाटन, वशीकरण आदि मिथ्या भ्रमजाल में फंसाने वाली बातों से भी बालकों को सावधान कर दें जिससे किसी के मिथ्या भ्रमजाल में फंसकर दु:ख के भागी न बनें। बालकों को यह भी भली प्रकार से बतला दें कि वीर्य की रक्षा में आनन्द तथा उसके नाश में महादु:ख की प्राप्ति होती है। जिनके शरीर में सुरक्षित वीर्य रहता है उसके अन्दर आरोग्य, बुद्धि, बल, पराक्रम बढ़कर अत्यन्त सुख की प्राप्ति होती है। इसके रक्षण की यह रीति है कि विषयों की कथा, विषयी लोगों का संग, विषयों का ध्यान, स्त्री का दर्श, एकान्त सेवन सम्भाषण और स्पर्श आदि से ब्रह्मचारी लोग सदा पथक् रहकर उत्तम शिक्षा और पूर्ण विद्या को प्राप्त कर आनन्दित होवें। जिसके शरीर में वीर्य नहीं होता वह नपुन्सक महाकुलक्षणी और जिसको प्रमेह रोग होता है वह दुर्बल, निस्तेज, निर्बुद्धि, उत्साह, साहस, धैर्य, बल, पराक्रम आदि गुणों से रहित होकर नष्ट हो जाता है। जो तुम लोग उत्तम शिक्षण और विद्या के ग्रहण करने में इस समय चूकोगे तो पुन: इस जन्म में तुमको यह अमूल्य समय प्राप्त न हो सकेगा। इस प्रकार की जीवन उपयोगी शिक्षाएं माता-पिता अपनी सन्तान को सदा दिया करें। आगे इसी प्रसंग में ऋषि दयानन्द जी लिखते हैं-

माता-पिता जैसे अन्य शिक्षा करें वैसे ही चोरी, जारी, आलस्य, प्रमाद, मादक द्रव्य, मिथ्या भाषण, हिंसा, क्रूरता, ईर्ष्या, द्वेष आदि दोषों के छोड़ने और सत्याचार के ग्रहण करने की भी शिक्षा करें। सब बालकों को सतय भाषण तथा सत्य प्रतिज्ञायुक्त सदा होना चाहिए। किसी को अभिमान न करना चाहिए। छल, कपट तथा कृतघ्नता से अपना ही हृदय दु:खित होता है तो फिर दूसरों का क्या कहना। बालकों को माता-पिता यह भी शिक्षा दें कि वे क्रोध आदि दोष और कटु वचन को छोड़ शान्त और मधुर वचन ही बोलें और बहुत बकवाद न करें। जितना बोलना चाहिए, उससे न अधिक बोलें, न न्यून। बड़ों को मान दें। उनके सामने जाकर उन्हें उच्चासन पर बैठावें प्रथम नमस्ते करें। उनके सामने स्वयं उच्चासन पर न बैठे इत्यादि।

साभार : आचार्य भद्रसेनकृत
आदर्श गृहस्थ जीवन

आदर्श गृहस्थ जीवन : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्त के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

दिल्ली सभा के तत्त्वावधान में 19वां आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने संस्कार विधि में लिखा है कि परस्पर समान गुण-गर्म और स्वभाव वाले युवक-युवतियों का विवाह कराना चाहिए। स्वामी जी के इन्हीं वैवाहिक विचारों के आधार पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली के निर्देशन पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा कई वर्षों से आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलनों का आयोजन किया जा रहा है। इन परिचय सम्मेलनों में उच्च व मध्यम आय वाले अथवा उच्च आय वाले सभी परिवारों के युवक-युवतियों का परिचय कराया जाता है।

अभी तक आयोजित वैवाहिक परिचय सम्मेलनों में यह बात अनुभव की गई कि अधिक आय वाले आभिजात्य वर्ग के परिवारों को इस प्रकार के सम्मेलन में उचित वर-वधू चयन में कठिनाई होती है। यही विचार कर इस बार दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा उच्च आर्य वाले एवं उच्च शिक्षित प्रोफेशनल वर्ग के आर्य युवक-युवतियों के वैवाहिक परिचय सम्मेलन के आयोजन पर विचार किया गया है। हमारे शास्त्रों में भी कहा गया है कि आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति समान हो ऐसे जनों के साथ ही परस्पर विवाह सम्बन्ध स्थापित करने चाहिए। जीवन की इन्हीं शास्त्रीय मर्यादाओं के अनुरूप आयोजित उच्च शिक्षित-प्रोफेशनल वर्गीय आर्य विवाह योग्य युवक-युवतियों क परिचय सम्मेलन में भाग लेने हेतु स्वयं रजिस्ट्रेशन उच्च आय वर्ग (मासिक आय 50 हजार रुपये प्रतिमाह) वाले करावें तथा अन्यों को भी प्रेरित करें।

पंजीकरण शुल्क : 500/- का डिमाण्ड ड्राफ्ट पंजीकरण फार्म के साथ **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा - 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001** के पते पर भेजना अनिवार्य है। पंजीकरण शुल्क सीधे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम एक्सिस बैंक खाता सं. 910010001816166 करोलबाग शाखा नई दिल्ली में जमा कराकर रसीद फार्म के साथ भेजें।

अर्जुनदेव चड्ढा, राष्ट्रीय संयोजक (09414187428)
एस.पी. सिंह, दिल्ली संयोजक (09540040324)

पंजीकरण संख्या : || ओ३म्|| रसीद संख्या :

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वाधान में

उच्च आय वर्ग एवं उच्च शिक्षित प्रोफेशनल
आर्य युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन

सम्मेलन कार्यालय : 15, हनुमान रोड़, नई दिल्ली - 110001 टैलिफैक्स :- 011-23360150, 23365959
Email: aryasabha@yahoo.com website : www.thearyasamaj.org

पंजीकरण प्रपत्र

: व्यक्तिगत विवरण :

"आवेदक अपना फोटो अनिवार्य रुप से लगाएं।"

1. युवक/युवती का नाम :........................ गोत्र........................
2 जन्मतिथि:........................ स्थान : ....
3. रंग........................ वजन .... लम्बाई ....
4. योग्यता (शैक्षणिक एवं अन्य) : ....
5. युवक/युवती सेवारत, व्यवसाय में है तो उसका विवरण/पता/........................ व्यक्तिगत मासिक आय........................

: पारिवारिक :

6. पिता/सरंक्षक का नाम .... व्यवसाय: .... मासिक आय........................
7. पूरा पता:........................
दूरभाष .... मोबा.:........................ ईमेल :........................
8. मकान निजी/किराये का है........................
9. माता का नाम :........................ शिक्षा :........................ व्यवसाय :........................
10. भाई - अविवाहित........................विवाहित........................ | बहिन- अविवाहित........................विवाहित........................ |
11. उम्मीदवार/अभिभावक किस आर्यसमाज के सदस्य हैं? (आवश्यक)........................
12. युवक/युवती कैसी चाहिए (संक्षिप्त टिप्पणी दें) ....
13. युवक/युवती यदि इनमें से हो तो सही पर (✓) लगाएं : ☐ विधुर : ☐ विधवा : ☐ तलाकशुदा : ☐ विकलांग :
14. **विशेष: प्रत्याशी की मासिक आय 50 हजार रु. से अधिक तथा उच्च शिक्षित प्रोफेशनल हो वह ही फार्म भरें।**

मैं........................घोषणा करता हूँ कि इस फार्म में मेरे द्वारा दी गई समस्त जानकारी एवं तथ्य पूर्णतया सत्य है।

दिनांक : ....

हस्ताक्षर अभिभावक/ प्रत्याशी

कार्यक्रम स्थल :- आर्य समाज, बी-ब्लॉक, जनकपुरी, नई दिल्ली-58

दिनांक : 4 फरवरी 2018, रविवार **समय :- प्रातः 10 बजे से**

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क सूत्र :
श्री अर्जुनदेव चड्डा, राष्ट्रीय संयोजक मो. 09414187428, श्री एस.पी. सिंह, संयोजक- दिल्ली क्षेत्र मो. 09540040324
श्री कृष्ण बवेजा प्रधान, मो. 9810327440, श्री जगदीश चन्द्र गुलाटी मंत्री, मो 987132928 श्री यशपाल आर्य, कोषाध्यक्ष मो.9868328290
आर्य समाज, बी-ब्लॉक, जनकपुरी, नई दिल्ली-58

नोट : 1. ई-मेल एडरेस, मोबाईल व फोन नम्बर लिखना आवश्यक है
2. विकलांग युवक-युवतियों तथा विधवा एवं तलाकशुदा युवतियों के लिये रजिस्ट्रेशन शुल्क 50% छूट होगी।
3. विवाह सम्बन्ध बनाने से पूर्व दोनों पक्ष अपनी पूर्णसन्तुष्टि कर लें। सभा इसके लिए उत्तरदायी नहीं होगी।
4. आप इस फार्म को www.thearyasamaj.org से डाउनलोड कर भेज सकते हैं। फोटो कॉपी प्रति भी मान्य है।
यह फार्म ऑनलाइन भी भर सकते है लिंक - matrimony.thearyasamaj.org
5. पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ दिल्ली आर्य प्रतिनिधी सभा नई दिल्ली के नाम रु. 500/- (पाँच सौ रुपये) का डिमांड ड्राफ्ट संलग्न कर अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम एक्सिस बैंक खाता सं. 910010001816166 करोल बाग शाखा में जमा कराकर रसीद फार्म के साथ भेजें। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.), 15- हनुमान रोड़, नई दिल्ली-1 के पते पर कार्यालय में सम्मेलन की तारीख से 15 दिन पूर्व भेज दे, ताकि प्रत्याशी का विवरण पुस्तिका मे प्रकाशित किया जा सके।
6. **माता-पिता/अभिभावक रजिस्ट्रेशन शुदा पुत्र/पुत्री को सम्मेलन में अवश्य लावें। कॉलम नं. 11 भरना आवश्यक है।**
7. **रजिस्ट्रेशन शुल्क 500/- प्राप्त किये जाने पर ही रजिस्ट्रेशन फार्म स्वीकार किया जायेगा।**

युवक और युवतियाँ परस्पर एक-दूसरे के गुण-कर्म और स्वभाव मिलने पर ही विवाह करें- महर्षि दयानन्द सरस्वती

पुस्तक परिचय

स्वाध्याय सन्दोह

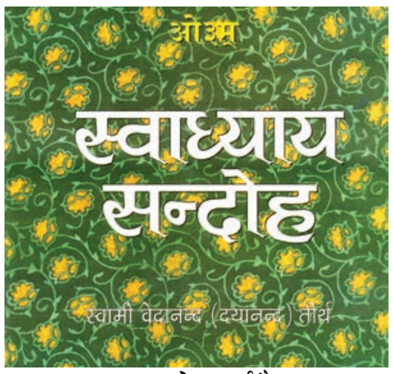

वेद स्वाध्याय करने वाले महानुभावों के लिए यह पुस्तक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। इसमें चारों वेदों के चुने हुए 367 मन्त्रों की बहुत ही सरल, सुन्दर व रोचकतापूर्ण व्याख्या की गई है। सामान्य हिन्दी को जानने वाले अध्येता और विद्वानों के लिए यह पुस्तक बहुत उपयोगी सिद्ध हुई है।

प्रतिदिन एक-एक मन्त्र का स्वाध्याय करके कोई भी व्यक्ति (पुरुष-महिला) वेद पढ़ने-पढ़ाने व सुनने-सुनाने का कर्त्तव्य पालन कर सकता है अर्थात् महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के अनुसार परमधर्म का पालन करना। वेदों के श्रेष्ठ, स्वच्छ, पवित्र, नित्य, सत्य- स्वरूप ईश्वरीय ज्ञान प्राप्ति का यह सरल व सुबोध मार्ग है। यह पुस्तक स्वाध्याय व किसी भी विवाह समारोह में सप्रेम भेंट हेतु आप भी प्राप्त कर सकते हैं।

पुस्तक प्राप्ति के लिए सम्पर्क करें:-
वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001, मो. नं. 9540040339

आर्यजनों के लिए खुशखबरी
महर्षि दयानन्दकृत
सम्पूर्ण साहित्य एवं
सत्यार्थ प्रकाश (18 भाषा में)
अब सीडी में उपलब्ध

मूल्य मात्र 30/- रुपये

खुशखबरी! खुशखबरी!! खुशखबरी!!!

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
वर्ष 2018 का
कैलेण्डर प्रकाशित
मूल्य 1200/-रुपये सैंकड़ा
200 से अधिक प्रतियां के आर्डर देने पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (300/- सैकड़ा) पर उपलब्ध है। सम्पर्क करें-
व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.), 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1

अब देखिए
सारथी एक संवाद
हर रविवार दोपहर 12:30 बजे से

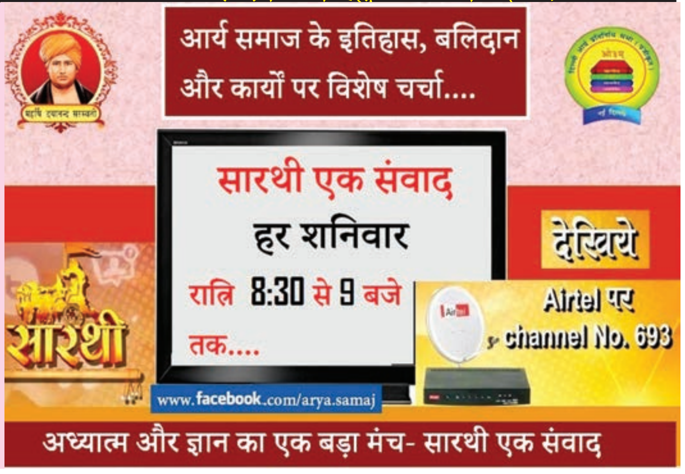

Veda Prarthana - 23

Become the Master of the Soul and Destroy Your Vices

- Acharya Gyaneshwarya

Continue from Last Issue ...

उलूकयातुं शुशुलूकयातुं जहिश्वयातुमुत कोकयातुम्। सुपर्णयातुमुत गृध्रयातुं दृषदेव प्र मृण रक्ष इन्द्र।।

Ullookyatum shushulookyatum jahi schvayatum ut kokyatum. Suparnyatum grdhyatum drshad eva pramrna raksha indra.

(Atharva Veda 8:4:22)

The mantra advises us to have self-control over our sexual desires and practice sexual intercourse without lust, in moderation, within the confines of marriage to promote love and partnership between the husband and wife.

The fifth example is that of an eagle. The eagle is a majestic appearing birdbath in appearance and in its flight as well as it is a strong and powerful bird. However, the eagle is considered to be full of vanity and considers it-self superior to other birds because of its majestic qualities. Moreover, to show off its superiority, the eagle is prone to attack and kill other smaller birds and animals. Similarly, when the vice of vanity affects a person, the affected person considers him-self/herself superior to others due to personal wealth, knowledge, social or executive position, beauty, attractiveness, physical prowess etc, and looks down at others with disdain. Gradually the person loses his/her abiliy to relate or work with others in a caring, friendly or constructive manner, and finally loses others' support and loyalty. Also, at times of need, the person finds himself/herself alone with no true friend who can give genuine help or advice. The mantra advises us never to have false pride, instead we should be humble and helpful to others, and become caring, kind, forgiving and loving towards others.

The sixth example is that of a vulture, in Sanskrit called gridh from which the English word greed is derived. The vulture is considered to be very greedy bird who is always looking, searching and waiting for a dying or helpless animal. When the vulture finds a victim, it attacks mercilessly pecking with its beak while the victim is in misery and crying in distress. Once a person acquires a similar nature of greed, he/she exploits others especially those who are ignorant, inexperienced, helpless due to mental feebleness, old age or infirmity, or stuck in a terrible financial situation due to loss of a job or death of a breadwinner, bad habits such as addiction etc. Such a greedy person has no regard for personal integrity, empathy for others or decency but his/her only goal is to make profit from the situation and enrich himself/ herself with wealth and prosperity by any means possible even if the means are wrong, exploitative and condemnable. The mantra advises us that we should give up being greedy and miserly because greedy persons also suffer like vain persons due to isolation, lack of loving caring relationships and having no genuine friends.

When many vices and evils above described become the prevailing norm among a large number of persons in a society, culture or a nation, then the people in that society, culture or nation lose their cohesiveness, harmony, happiness, peace, freedom and independence. Instead, people as a whole develop insecurity, fear, doubt, confusion, suffering, gradual downfall and disintegration. There fore, come true devotees of God first get rid of your own remaining vices and then with utmost effort help others get rid of their vices and then with utmost effort help others get rid of their vices. Let us move ahead united with the common goal of promoting God. truth and virtue in the society and the nation so that we can again experience peace, harmony, joy and fulfillment in life.

(To get rid of your vices and bad conduct in life : also see mantra # 14,15,16,18 and 20)

To be continued...

आओ ! संस्कृत सीखें

शब्दार्थ – 32
समास प्रकरण

गतांक से आगे....

समास– दो या दो से अधिक शब्दों को मिलाकर एक नया शब्द बनाने को समास कहते हैं ।

समास का अर्थ हैं संक्षेप करना। समास कर लेने पर समास को प्राप्त हुए शब्दों के बीच की विभक्तियां नहीं रहतीं व अन्त में पूरे (मिलकर बने हुए) शब्द में एक विभक्ति लग जाती है ।

विग्रह– समास को अलग करके उसकी पहले वाली स्थिति में रखने को विग्रह कहते हैं। **उदाहरण**– राज्ञः पुरुषः (विग्रह)= राजपुरुषः(समास) ।

यहां विग्रह वाक्य में राज्ञः(राजा का) एक शब्द है व पुरुषः(व्यक्ति)दूसरा शब्द है । इन दोनों शब्दों से मिलकर एक शब्द ''राजपुरुषः'' बन गया। ''राज्ञः'' शब्द में स्थित मध्य की षष्ठी विभक्ति का लोप हो गया।

समास के मुख्य रुप से पांच भेद होते हैं– 1. अव्ययीभावः 2. तत्पुरुषः 3. बहुव्रीहिः 4. द्वन्द्वः 5. केवल समास।

1. अव्ययीभाव समास : इसमें पहला शब्द अव्यय होता है बाद का शब्द कोई संज्ञा शब्द होता है। इस समास वाले शब्द नपुंसक लिंग में व अव्यय होते हैं।

उदाहरण– हरौ इति= अधिहरि। यहां विग्रह वाक्य में हरि शब्द में सप्तमी विभक्ति है जबकि समास में सप्तमी के अर्थ में ''अधि'' अव्यय का प्रयोग किया गया है।

2. कृष्णस्य समीपम्= उपकृष्णम् (समीप अर्थ में उप अव्यय)।

3. विघ्नानाम् अभावः= निर्विघ्नम् (अभाव अर्थ में निर् अव्यय)।

4. रथानाम् पश्चात्= अनुरथम् (पीछे अर्थ में अनु अव्यय)।

5. गृहं गृहं प्रति= प्रतिगृहम् (व्याप्ति अर्थ में प्रति अव्यय)।

2. तत्पुरुष समास – तत्पुरुष समास में दो या दो से अधिक शब्दों के मिलने पर बीच की द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी या सप्तमी विभक्ति का लोप हो जाता है व जिस विभक्ति का लोप होता है उसी के नाम से समास का नाम हो जाता है। इसमें बाद वाले शब्द के अर्थ की प्रधानता रहती है (उत्तरपद प्रधानस्तत्पुरुषः)।

उदाहरण– भयं प्राप्तः= भयप्राप्तः। यहां समास होने पर ''भय'' शब्द में प्रयुक्त द्वितीया विभक्ति का लोप हो गया है अतः यह द्वितीया तत्पुरुष समास हो गया। यहां पहले शब्द ''भय'' को मुख्य रुप से न कहा जाकर भय को प्राप्त मनुष्य को कहा जा रहा है अतः बाद वाले अर्थ की प्रधानता हुई।

2. विद्यया हीनः= विद्याहीनः(तृतीया तत्पुरुषः)।

3. ज्ञानेन शून्यः= ज्ञानशून्यः(तृतीया तत्पुरुषः)।

4. भूताय बलिः= भूतबलिः(चतुर्थी तत्पुरुषः)।

5. गवे हितम्=गोहितम् (चतुर्थी तत्पुरुषः)।

– क्रमशः –

आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय

मो. 9899875130

प्रेरक प्रसंग

उनका संयोजन

सन् 1983 ई. को आर्यसमाज काकड़वाड़ी में आर्यसमाज स्थापना दिवस मनाया गया। हमें भी आमन्त्रित किया गया। महात्मा श्री आनन्दमुनिजी ही प्रधान थे। वे स्वयं एक प्रभावशाली वक्ता और विचारक थे। उन्हें सभा में बोलना ही था, परन्तु आपने थोड़े–से समय में बहुत मार्मिक बातें कहते हुए यह कहा कि ''आज हमारे मुख्य वक्ता तो प्राध्यापक राजेन्द्रजी जिज्ञासु हैं। मैं अपना शेष समय उन्हीं को देता हूँ ताकि हम सबका अधिक लाभ हो।''

यह ठीक है कि वहाँ कुछ सज्जनों ने सभा का संचालन करने वालों की व्यवस्था में गड़बड़ी कर दी। हमें तो अपना समय ही पूरा न मिल पाया। आनन्दमुनिजी का बचा हुआ समय भी और लोग ले–गये, परन्तु आनन्दमुनिजी की पवित्र भावना हम सबके लिए अनुकरणीय है कि समाज के हित में नये–नये लोगों को प्रोत्साहन देना चाहिए।

साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

_तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी_ : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा
के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। – सम्पादक

गुरुकुल स्नातक संगोष्ठी का आयोजन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा शीघ्र ही गुरुकुल स्नातक संगोष्ठी का आयोजित करना चाहती है, जिसमें ऐसे सभी महानुभावों जो गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति से शिक्षा प्राप्त हैं तथा दिल्ली में रहते हुए अपना व्यवसाय-व्यापार अथवा दिल्ली के विद्यालयों अथवा अन्य संस्थानों में अध्यापन कार्य में सेवारत हैं एवं पुरोहित कर्म नहीं करते हैं, को आमन्त्रित किया जाएगा। अतः यदि आप ऐसे महानुभाव हैं अथवा किसी ऐसे महानुभावों को जानते हैं तो कृपया अपना/उनका नाम, पता, मो. नं., ईमेल पता श्री राजीव चौधरी जी (09540095151) को लिखवाने अथवा daps.mediadesk @gmail.com पर भेजने की कृपा करें, जिससे संगोष्ठी की सूचना भेजी जा सके। - *महामन्त्री*

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत
केरल में स्वाध्याय एवं भ्रमण शिविर-2

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत केरल में 9 दिवसीय स्वाध्याय एवं भ्रमण शिविर-2 का **20-28 मार्च 2018** में आयोजन किया जा रहा है। **कुल यात्रा व्यय हवाई जहाज से 17500/- रुपये है।** इसमें होटल आवास, भोजन एवं हवाई यात्रा दो दिन मुन्नार एवं एक दिन ऐलैपी बैक वाटर्स भ्रमण भी सम्मिलित है। 4 दिवसीय स्वाध्याय शिविर में **महाशय धर्मपाल वेद अनुसंधान केन्द्र कालीकट** में आयोजित होगा जिसमें विभिन्न वैदिक विद्वानों द्वारा स्वाध्याय एवं प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा। सीमित 40 सीटें। पहले आओ-पहले पाओ के आधार पर व्यवस्था। प्रस्थान हवाई जहाज से 20 मार्च की प्रातः तथा वापसी 28 मार्च की रात्रि में होगी। जो आर्यजन सम्मिलित होना चाहें वे **संयोजक श्री शिवकुमार मदान (मो. 9310474979)** से सम्पर्क करें। -**महामन्त्री**

प्रथम पृष्ठ का शेष

रहा था, तब गोरे सिपाहियों ने जलुस को रोकने के लिए गोली चलाने की धमकी दी थीं। यह धमकी उस महान् आत्मा के लिए भारत माता की बलिवेदी पर अपने को कुर्बान कर देने की ललकार थी। साधारण मिट्टी के लोग उस धमकी को सुनकर ही तितर-बितर हो जाते परन्तु श्रद्धानन्द ही था जिसने छाती तानकर गोरों को गोली चलाने के लिए ललकारा। समाजशास्त्र का यह नियम है कि असाधारण परिस्थिति उत्पन्न होने पर महान् आत्मा के हृदय में असाधारण स्फुरण हो जाता है, असाधारण क्रियाशक्ति जो उसे समकालीन मानव समाज से बहुत ऊंचे ले जाकर शिखर पर खड़ा कर देती है।

मुझे इस स्थल मथुरा शताब्दी की एक घटना स्मरण हो आती है। उत्सव हो रहा था। स्वामी जी उत्सव का संचालन कर रहे थे, मुझे उन्होंने अपने पास कार्यवाही के संचालन को बैठाया हुआ था। अचानक खबर आयी कि शहर में दंगा, पण्डों ने आर्यसमाजियों को पीटा, उन पर लट्ठ चलाए। स्वामी जी इस समाचार को सुनते ही मुझसे कहने लगे देखो, कार्यवाही बदस्तूर चलती रहे, तुम यहां से मत हिलना, मैं मथूरा शहर जा रहा हूं। स्वामी जी उसी समय धटना स्थल पर पहुंचे और स्थिति को संभालकर लोटे उनके जीवन की एक-एक घटना तोयनबी के इस समाजशास्त्रीय नियम की विशद व्याख्या है कि विकट परिस्थिति आने पर प्रत्येक व्यक्ति उस परिस्थिति से निकल ने के जूझना चाहता है, परन्तु भीरूता के कारण जूझ नहीं पाता। उस समय कोई महापुरुष होता है तो सब की पीड़ा को अपने हृदय में चीखकर परिस्थिति की विषमता से लड़ने के लिए उठ खड़ा होता है, और जब कोई ऐसा महापुरुष समाने आता है तब उसके सिर उसके पैरों पर नत हो जाते हैं।

समय की चुनौती का जवाब देने वाले महापुरुष भारत में हुए है उनकी श्रेणी में श्रद्धानन्द का नाम स्वर्णक्षरों में लिखा जा चुका है। ऐसी महान् आत्मा को मेरा बार-बार नमस्कार है।

67वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज पटेल नगर का 67वां वार्षिकोत्सव 7 से 10 दिसम्बर के बीच आयोजित किया जा रहा है। कार्यक्रम का शुभारम्भ यजुर्वेदीय यज्ञ से होगा। यज्ञ ब्रह्मा स्वामी सम्पूर्णानन्द जी होंगे। भजन श्री रामपाल आर्य (शामली वाले), व वेद प्रवचन स्वामी सम्पूर्णानन्द सरस्वती जी के होंगे। -*कुलभूषण गुप्ता, महामंत्री*

88वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज बिड़ला लाइन्स, कमला नगर, का 88वां वार्षिकोत्सव 22 से 24 दिसम्बर तक आयोजित किया जा रहा है। सामवेदीय यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य कुंवरपाल शास्त्री जी होंगे। वेद प्रवचन आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय जी एवं भजन श्री नरदेव आर्य जी के होंगे। -*मन्त्री*

निर्वाचन समाचार

आर्य समाज शक्ति नगर, दिल्ली

प्रधान	-	श्री नरेन्द्र गुप्ता
मंत्री	-	श्री निशान्त गुप्ता
कोषाध्यक्ष	-	श्री अशोक

मैं आर्य समाजी कैसे बना?

आर्यसन्देश के समस्त पाठकों को विदित ही है कि 'आर्य सन्देश' में एक नया स्तम्भ '**मैं आर्य समाजी कैसे बना**' आरम्भ किया गया था। इस स्तम्भ में उन सभी महानुभावों का परिचय प्रकाशित किया जा रहा जो किसी की प्रेरणा/विचारधारा से आर्य समाजी बनें। यह स्तम्भ पुनः आरम्भ किया जा रहा है। यदि आपके साथ भी कुछ ऐसा हुआ है तो आप भी अपना प्रेरक प्रसंग अपने फोटो के साथ हमें लिखें या aryasabha @ yahoo. com पर ईमेल करें। हमारा पता है-

'सम्पादक', आर्य सन्देश
15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों से निवेदन
1 अप्रैल, 2018 को मनाएं अधिकतम संख्या दिवस

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों की सूचनार्थ निवेदन है कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा दिनांक 1 अप्रैल, 2018 को अधिकतम संख्या दिवस आयोजित करने का निर्णय लिया गया है। समस्त आर्यजनों से निवेदन है कि इस दिन अपनी-अपनी आर्यसमाज के यज्ञ एवं साप्ताहिक सत्संग में अवश्य ही सम्मिलित हों। समस्त आर्यसमाजों से भी निवेदन है कि इस हेतु अपनी तैयारियां करें। अपनी आर्यसमाज के समस्त सदस्यों को सूचित करें कि इस दिन के सत्संग में सब कार्य छोड़कर अवश्य सम्मिलित हों। इस सम्बन्ध में सभा द्वारा आवश्यक दिशा निर्देश शीघ्र जारी किए जाएंगे। सभा की ओर से सब आर्यसमाजों अपेक्षित सहयोग भी उपलब्ध कराया जाएगा। सबसे अधिक उपस्थिति वाली आर्यसमाज को सभा की ओर से पुरस्कृत किया जाएगा। इस दिन को अपनी आर्यसमाज का ऐतिहासिक दिन बनाएं। अतः अपनी आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग की उपस्थिति पंजीका के उस दिन की उपस्थिति की फोटो प्रति अपने पत्र के साथ सभा कार्यालय - 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली के पते पर भिजवाना न भूलें। - *विनय आर्य, महामन्त्री*

वैवाहिक विज्ञापन

आर्य वधू चाहिए

दिल्ली के प्रतिष्ठित आर्य परिवार के युवक, एम.सी.ए., डिप्लोमा (फोटोग्राफी), 30 वर्ष, लम्बाई 5'8'', सांवला, फोटोग्राफर, शाकाहारी, आय औसतन 50 हजार मसिक, हेतु आर्य परिवार की समकक्ष, सुशिक्षित वधू चाहिए। जाति-दहेज का कोई बन्धन नहीं। इच्छुक परिवार सम्पर्क करें-

मो. 9643152079, 9868997599, 9873988003, 011-27018041
Email : rajeev98739@gmail.com, savita595@gmail.com

'एक शाम स्वामी श्रद्धानन्द के नाम'

वेद प्रचार मण्डल उ.प्र. दिल्ली एवं आर्य समाज रोहिणी सै.-7 के तत्त्वावधान में 23 दिसम्बर को 'एक शाम स्वामी श्रद्धानन्द के नाम' का आयोजन किया जा रहा है। भजन श्री देव आचार्य के होंगे। मुख्य अतिथि श्री ताराचन्द बंसल (पूर्व उप-महापौर), श्री उमेश सिंह (पूर्व ए. सी.पी.), श्रीमती तनु सिंह (ए.सी.पी. रोहिणी) होंगे। आचार्य अखिलेश्वर जी एवं श्री सुखदेव आर्य तपस्वी आशीर्वाद प्रदान करेंगे। -*जोगेन्द्र खट्टर, महामंत्री*

गुरुकुल प्रभात आश्रम का वार्षिकोत्सव

गुरुकल प्रभात आश्रम का भोला झाल, टीकरी जानी मेरठ में मकर सौर संक्रांति के पावन अवसर पर 13 व 14 जनवरी 2018 को वार्षिकोत्सव मनाया जा रहा है। स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती जी (पं. बुद्धदेव विद्यालंकार) की 49वीं पुण्यतिथि पर अखिल भारतीय वैदिक शोध संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। जिसका विषय ''उपनिषदों में विविध विद्याएं'' रखा गया है। -*डॉ वाचस्पति, मंत्री*

शोक समाचार

श्री रवि बहल जी को पत्नी शोक

आर्य समाज निर्माण विहार के मंत्री एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा के विशिष्ट सम्मानित सदस्य श्री रवि बहल जी की धर्मपत्नी श्रीमती चंद्रप्रभा बहल का 30 नवम्बर को निधन हो गया। वे 67 वर्ष की थीं। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ निगम बोध घाट पर किया गया। वे अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़ गई। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 2 दिसम्बर आर्य समाज निर्माण विहार में सम्पन्न हुई, जिसमें सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी सहित निकटवर्ती अनेक आर्यसमाजों के पदाधिकारियों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किये।

श्री सुनहरी लाल यादव जी को पितृ शोक

आर्य समाज झिलमिल कॉलोनी के मंत्री श्री सुनहरी लाल यादव जी के पूज्य पिता श्री गेंदालाल यादव जी का 19 नवम्बर 2017 को निधन हो गया। वे अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़ गये हैं। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 3 दिसम्बर, 2017 को शिव मन्दिर नवीन शाहदरा दिल्ली में सम्पन्न हुई जिसमें दिल्ली की अनेक आर्यसमाजों के पदाधिकारियों ने अपने-अपने श्रद्धासुमन अर्पित किये।

माता चांद कौर का निधन

आर्यसमाज बांकनेर के पूर्व अधिकारी श्री मांगेराम आर्य जी की धर्मपत्नी श्रीमती चांद कौर जी का 90 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 3 दिसम्बर, 2017 को प्रकाश सदन बांकनेर, नरेला में सम्पन्न हुई।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

सोमवार 4 दिसम्बर, 2017 से रविवार 10 दिसम्बर, 2017
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.एन.डी.)–11/6071/2015–2017
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 7/8 दिसम्बर, 2017
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0सी0) 139/2015–2017
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 6 दिसम्बर, 2017

अवश्य देखें आर्यसमाज की वैबसाइट

व्हाट्सएप्प पर
आर्य समाज से जुड़ें
हमारा नंबर Save करें
9540045898
अपना नाम City और Yes लिख कर भेजें

प्रतिष्ठा में,

लगातार बढ़ रहे हैं आर्यसमाज YouTube चैनल के दर्शक

34 लाख से ज्यादा लोगों ने देखा अब तक

आप भी देखें और सब्सक्राइब अवश्य करें और अपने मित्रों, सम्बन्धियों को देखने की प्रेरणा करें।

यदि आप लगातार नई वीडियो देखना/सूचना प्राप्त करना चाहते हैं तो घंटी बटन दबाकर सब्सक्राइब करें।

यदि आप भी अपने आर्यसमाज के आयोजनों – भजन, प्रवचन, सन्देशात्मक कार्यक्रम, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों को इस चैनल पर अपलोड कराने के लिए upload@thearyasamaj.org पर भेजें। – महामन्त्री

जुड़िए आर्यसमाज के फेसबुक से जोड़िए अपने मित्रों को और दीजिए सन्देश आर्यसमाज का

Arya Sandesh
www.facebook.com/samajaryasandesh

फेसबुक : आर्यसन्देश साप्ताहिक

Arya Samaj Facebook
www.facebook.com/arya.samaj

फेसबुक : आर्यसमाज

Vedic Prakashan
www.facebook.com/vedicparkashan

फेसबुक : वैदिक प्रकाशन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह